P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-1* April- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

डीग पर्यटक स्थल के विकास की सम्भावनाएं : एक भौगोलिक अध्ययन

धर्मेन्द्र सिंह चौहान
विभागाध्यक्ष,
भूगोल विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर

सतीश कुमार दायमा
शोधार्थी,
भूगोल विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर

सारांश

राजस्थान राज्य का पर्यटन की दृष्टि से अपना महत्वपूर्ण स्थान है। प्रतिवर्ष यहाँ पर हजारों की तादात में पर्यटक यहाँ आते है। राज्य के हर जिले में दर्शनीय स्थल देखने को मिलते है। भारत की सैर करने वाला हर तीसरा पर्यटक विदेशी सैलानी राजस्थान देखने जरूरत आता है। पर्यटक के लिए राजस्थान का भरतपुर के डीग महल भी भव्यता लिये हुऐ है। समस्याएँ विद्यमान है, फिर भी पर्यटन से शहर के भावी विकास की संभावनाएँ है। जहाँ एक ओर तीव्र विकास की विपुल संभावनाएँ है वही दूसरी और आवश्यक सामुदायिक, सुविधाओं के अभाव के कारण शहर के पर्यटक स्थलों को नकारा नही जा सकता भावी विकास की सम्भावनाओं का पता लगाकर जहाँ तक संभव हो, उनका क्रियान्वयन करना है।

मुख्य शब्द : पर्यटक, पर्यटन, विपुल, सैलानी।

प्रस्तावना

पर्यटन मानव का प्राचीन और रूचिकर क्रियाकलापों का क्षेत्र रहा है, यह भूगोल विषय के साथ आरम्भिक काल से अनवरत रूप से जुड़ा हुआ है। जिसमे नये स्थानों की जानकारी ने मानव को जिज्ञासु प्रवृति के रूप में गति प्रदान की जो मानव की जीवन निर्वाह से लेकर विलासिता तक जुडी हुई है यह आज भौगोलिक अध्ययन का एक आधारभूत संरचना युक्त स्तम्भ बन गया है। जिसकी संरचना को मजबूत करने में आधुनिक संचार एवं परिवहन प्रणाली भी उपयुक्त योगदान दे रही है, इसके माध्यम से पर्यटन विश्वव्यापी हो गया है। यह कुछ स्थानों पर नवोदित उद्योग के रूप में विकसित हो चुका है। पर्यटन की वृहद सोच के साथ ही अब इसके क्षेत्र का अत्यधिक विस्तार हो रहा है। इससे क्षेत्र एवं जनसंख्या का प्रत्येक भाग लाभान्वित हो रहा है। पर्यटन, खेल, मनोरंजन, शिक्षा एवं चिकित्सा के साथ विभिन्न सम्बन्धों से युक्त हो गया है। शिक्षा प्रणाली में भी देशाटन या पर्यटन करना एक आवश्यक शोध–विधि बन गया है। जिससे किसी भी शोध विषय के अध्ययन में गुणात्मकता एवं सार्थकता की महत्ता बढ़ जाती है। पर्यटन वर्तमान एवं भावी स्वरूप व महत्व की ओर स्वतः ही इंगित करता है।

अध्ययन क्षेत्र

डीग, भरतपुर जिले का एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक शहर है। स्कन्ध पुराण तथा भागवत महाकाव्य में इसका उल्लेख 'दीर्घ' नाम से आता है। वर्तमान में यह उप जिला मुख्यालय, तहसील–मुख्यालय एवं पंचायत समिति मुख्यालय है। डीग यहाँ के आकर्षक राजमहलों (जलमहल) के लिए देश–विदेश में विख्यात है, जिनमें गोपाल भवन, सूरज भवन, किशन भवन, केश्व भवन, हरदेव भवन (जनाजा–पैलेस) आदि मुख्य है।

भरतपुर जिले की स्थिति

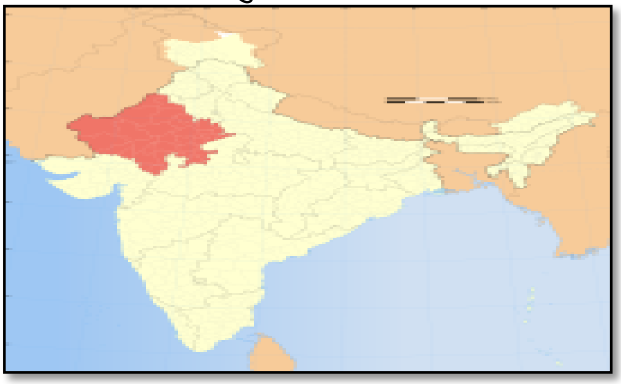

P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-1* April- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

डीग $27^0.28'$ उत्तरी अक्षांश एवं $77^0.20'$ पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। डीग प्रायः समतल भूमि पर बसा हुआ है। समुद्र वन से इसकी समुद्र तल से इसकी ऊँचाई लगभग 179 मीटर है डीग के दक्षिण–पश्चिम में एक टीलेनुमा पहाड़ी है। डीग भरतपुर, जिले के उत्तर–पूर्व में स्थित उप–जिला मुख्यालय है। डीग यहाँ के राजमहलों (जलमहलों) एवं आकर्षक रंगीन फव्वारों के लिए अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन स्थल के रूप में प्रसिद्ध है। यह अलवर–भरतपुर राजमार्ग संख्या 14 पर जिला मुख्यालय भरतपुर से लगभग 34 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। सड़क मार्ग से यह राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली से 152 किलोमीटर जयपुर से 215 किलोमीटर, मथुरा से 35 किलोमीटर व अलवर से 76 किलोमीटर दूरी पर है। हाल ही में निर्मित अलवर–मथुरा बड़ी रेल लाइन के बन जाने से यह नगर देश के प्रमुख शहरों राष्ट्रीय राजधानी, दिल्ली, मथुरा, अलवर आदि से जुड़ गया है।

साहित्यावलोकन

एन. के. वर्मा 2010 ने अपनी पुस्तक ''ट्यूरिज्म केरियर'' में बताया कि ट्रेवल व पर्यटन में व्यक्ति अपना केरियर बना सकता है, होटल मैनेजमेंट का कोर्स करके नई पीढ़ी ट्रेवल एजेंसियों से जुड़कर अपना केरियर बना सकती है। एन.के. वर्मा 2010 ने अपनी पुस्तक ''एच.आर. एम. इन ट्यूरिज्म इण्डस्ट्रीज'' में होटल प्रबन्धन पर प्रकाश डाला। एक संगठन तथा उसकी एजेंसियों तथा उप विभागों आदि के द्वारा एक निष्चित उद्देष्यों पर पहुंचा जा सकता है। गेस्ट की संतुष्टि व मनोरंजन, व्यवसाय तथा प्रबंधन केटरिंग उद्योग पर वर्णन किया। के.एस. नागापथी 2011 ने अपनी पुस्तक ''ट्यूरिज्म डवल्पमेंट, ए न्यू अपरोच'' पर्यटन का अर्थ, पर्यटन के प्रकार, हेरिटेज होटल, ट्रेवल एण्ड ट्यूर ऑपरेट्स, ट्यूरिज्म प्लानिंग व विकास पर काफी प्रकाष डाला है। डॉ. रेणु कथुरिया, 2011 ने अपनी पुस्तक ''पर्यटन विकास'' ने बताया कि समुचे विकासशील उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में संरक्षित क्षेत्र प्रबन्धकों और स्थानीय समुदायों को आर्थिक विकास और प्राकृतिक संसाधनों की संरक्षण की आवष्यकता के बीच संतुलन कायम करने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। पर्यावरण पर्यटन भी एक महत्वपूर्ण संतुलन का पक्ष है। अषोक मनोरम 2012 ने अपनी पुस्तक ''रिसर्च मेथड्स फॉर ट्रेवल एण्ड ट्यूरिज्म'' में रिसर्च मेथड्स परिभाषित किया तथा मात्रात्मक व गुणात्मक रिसर्च को महत्त्व दिया। पर्यटन व ट्रेवल पर रिसर्च प्लान दिये। अतुल शर्मा, 2012 ने अपनी पुस्तक ''पर्यटन भूगोल'' में पर्यटन एवं भूगोल में सम्बन्ध बताये, पर्यटन भौगोलिक प्रकृति का एक भाग है और यह उसकी छाया में ही पनपता है आदि को स्पष्ट किया है।

भारत एवं राजस्थान में पर्यटन भूगोल के क्षेत्र में विश्वविद्यालयों में उल्लेखनीय कार्य किये गये हैं। भारतीय विश्वविद्यालयों में भूगोल के स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं में पर्यटन भूगोल एक पूर्व रूप से स्थापित विषय है तथा विभिन्न स्तरों पर अनेक शोधकार्य हो रहे हैं। पर्यटन भूगोल में वर्तमान में अनेक पाठ्य पुस्तके भी उपलब्ध करायी गई है पर्यटन विकास एक विशेष वातावरण में उपयोगी एवं सामाजिक महत्व का रहे इस ओर ही यह शोध कार्य करने का एक सहज एवं आकादमिक प्रयास है। शोध पत्र में दिये गये सन्दर्भ ग्रन्थ सूची के पश्चात् उक्त शोध विषय पर किसी प्रकार का शोध कार्य नहीं किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. डीग के पर्यटन स्थलों को विश्व पर्यटक स्थलों में शामिल करना।
2. पर्यटन स्थलों के जीर्णोद्धार करके इसकी अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना।
3. पर्यटक स्थलों का विश्लेषण व मूल्यांकन करना।

4. डीग पर्यटक स्थलों के विकास की संभावनाओं की पहचान करना।

परिकल्पना

1. लगातार हो रही जनसंख्या वृद्धि से पर्यटक स्थलों की पहुँच तक समस्याएँ खड़ी हो रही है।
2. मानवीय हस्तक्षेप के कारण कई प्रकार की आतंकी गतिविधियों का बढ़ना।
3. जिला राजधानी क्षेत्र, सरकार की अकुाश्ल नीतियों द्वारा भी यह क्षेत्र पर्यटक की दृष्टि से ह्रासमान हो रहा है।

शोध विधि

अध्ययन पर्यटक स्थलों के विकास से सम्बन्धित है अतः समंको का एकत्रण प्राथमिक एवं द्वितीय स्तर पर किया गया है।

डीग पर्यटक स्थल

डीग, ऐतिहासिक दृष्टि से प्राचीन नगर है, जो कि पौराणिक स्थल है। स्कन्ध पुराण में इसका उल्लेख ब्रज क्षेत्र में स्थित नन्दीग्राम व बरसाना एवं गोवर्धन के साथ 'दीर्घपुरा' के नाम से आता है। महाराजा बदनसिंह (1722–1756) आसपास के क्षेत्रों की सम्मलित कर इसे जाट राज्य का मुख्यालय बनाया। महाराजा बदनसिंह के पुत्र सूरजमल ने डीग का विकास किया व गोपाल भवन, गोपाल सागर, किशन भवन आदि सुन्दर भवनों ाक निर्माण किया। डीग में ऐतिहासिक महत्व के विशिष्ट स्थल है, जिनमें जलमहल, लक्ष्मण मंदिर, आदि प्रमुख है।

स्वतन्त्रता के बाद शहर का विकास मुख्यालय पश्चिमी व दक्षिण की तरफ हुआ है। रीको द्वारा डीग अलवर राजमार्ग संख्या–14 पर औद्योगिक क्षेत्र विकसित किया गया तथा राजस्थान राज्य कृषि विपणन बोर्ड द्वारा नई कृषि उपज मण्डी परिसर की स्थापना की गई है। इस प्रकार यह विकास की और गतिशील है। अलवर–मथुरा ब्रॉडग्रेज रेल लाइन बन जाने के फलस्वरूप वर्ष 1995 में रेल्वे स्टेशन की स्थापना हुई। डीग के आकर्षक जलमहलों व रंगीन फव्वारों के लिए देश–विदेश में प्रसिद्ध है। पर्यटकों की सुविधा के लिए बस स्टेण्ड के समीप मिडवे बनाया गया है पर्यटन की दृष्टि से डीग दिल्ली–आगरा–जयपुर स्वर्ण पर्यटन त्रिकोण के मध्य स्थित है। अतः इस और आने वाले पर्यटक में डीग के महलों को देखने की विशेष उत्सुकता रहती है। डीग के आकर्षक महलों का निर्माण भरतपुर के महाराजा सूरजमल द्वारा सन् 1755 से 1763 के मध्य करवाया गया था। बालुई पत्थर द्वारा निर्मित ये राजमहल एक चतुर्भुजाकार परिक्षेत्र में निर्मित है। इनके मध्य में 145 मीटर×107 मीटर का एक विशाल बाग है।

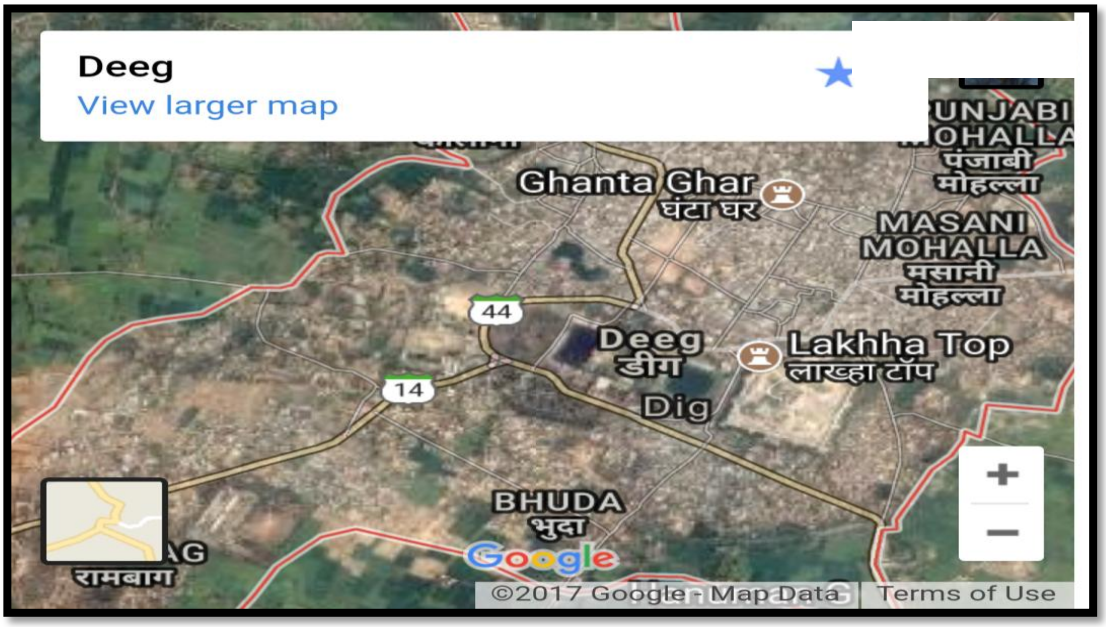

जिसमें फव्वारे एवं फूलों के उद्यान बने हुए है। इस चतुर्भुजाकार परिसर के पूर्व व पश्चिम में विशाल पक्के तालाब है। पश्चिम में स्थित मुख्य भवन गोपाल भवन कहलाता है, तथा पीछे की और अतिरिक्त मंजिल बनी हुई है, जिनमें से एक हमेशा पानी में डूबी रहती है।

परिसर के उत्तर में नन्द भवन तथा दक्षिण की और सूरज भवन व किाश्न भवन स्थित है। सूरज भवन मकराना से लाये गये मार्बल पत्थर द्वारा निर्मित है। बालुई पत्थर द्वारा निर्मित किश्न भवन की छत पर तत्कालीन, अभियांत्रिक की आश्चर्यजनक श्रेष्ठता प्रदर्शित करता हुआ एक विशाल टैंक बना हुआ है। चतुर्भुजाकार परिसर के पूर्व की ओर केशव भवन है, जिसे 'बारादरी' भी कहा जाता है। दक्षिण में सूरज भवन के पीछे चतुर्भुजाकार परिसर के बाहर जनाना भवन स्थित है। डीग के जलमहल परिसर एवं 'बारादरी' में आकर्षक फव्वारे बने है, िजनसे समय–समय पर रंगीन फव्वारे चलाये जाते है। जलमहलों के साथ इन रंगीन फव्वारे को देखने के लिए देशी–विदेशी पर्यटकों में काफी उत्सुकता रहती है। ये पर्यटक नवम्बर से फरवरी के मध्य आते है। सामान्यतः भरतपुर में स्थित 'राष्ट्रीय बना पक्षी बिहार आने वाले पर्यटक डीग के जलमहलों का भी अवलोकन करते है।

शीतऋतु में अनुमानत 2500 विदेशी पर्यटक के द्वारा प्रतिमाह डीग के राजमहलों व 'रंगीन फव्वारों का अवलोकन किया जाता है। अनुमानतः प्रतिवर्ष 50,000 देशी पर्यटक डीग के जलमहलों तथा रंगीन फव्वारों को देखने के लिए आते है।

स्थानीय नगरपालिका द्वारा मेला मैदान पर 'जवाहर प्रदर्शनी' व 'पशुमेला' का आयोजन भी दशहरा पर्व से पूर्व भादो माह (सितम्बर) में किया जाता है, जिसमें करीब 1,000 पशु खरीद–फरोख्त के लिए आते है। इस मेला अवधि में जलमहलों में रगीन फव्वारे चलाये जाते है तथा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाता हे। रंगीन फव्वारों को देखने के लिए आसपास के क्षेत्र की जनता में अत्यधिक उत्साह रहता है। मेला अवधि में अनुमानत 26 से 25 हजार व्यक्तियों के द्वारा रंगीन फव्वारों का अवलोकन किया जाता है।

पर्यटक सुविधाओं हेतु पर्यटन विभाग द्वारा अलवर रोड पर 'मिड–वे' का निर्माण भी किया जाता है।

परिवहन

डीग जिला मुख्यालय भरतपुर से लगभग 34 किलोमीटर की दूरी पर राजमार्ग संख्या–14 पर स्थित है राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली, मध्यप्रदेश के महत्वपूर्ण शहर मथुरा से भी यह सड़क मार्ग द्वारा जुडा हुआ है। डीग से मथुरा, दिल्ली, अलवर, जयपुर, भरतपुर, आदि मुख्य मार्गों पर राजस्थान स्टेट रोडवेज के विभिन्न आगारों की लगभग 170 बसों का आवागमन होता है। इसके अलावा ग्रामीण क्षेत्र से जुडे मार्गों पर भी लगभग इतनी की बसे व अन्य वाहन संचालित होते है। डीग से प्रतिदिन रोडवेज एवं निजी वाहनों द्वारा लगभग 5 से 7 हजार यात्रियों का आवागमन एवं प्रस्थान होता है।

समस्याएं

1. डीग से बाहर से आने वाले पर्यटकों के लिए रात्रि विश्राम हेतु कोई पर्याप्त सुविधाएँ उपलबध नहीं है जिससे ज्यादातर पर्यटक दिन में ही डीग आने के बाद भरतपुर अथवा आगरा में "रात्रि विश्राम" करते है।
2. वर्तमान में स्टेशन के पास अवाधिकृत निर्माण के कारण यातायात अव्यवस्थित रहता है। डीग में लक्ष्मण मंदिर से घंटाघर तक मुख्य बाजार में अव्यवस्थित पार्किंग व पटरी पर अतिक्रमण के कारण यातायात अस्त–व्यस्त रहता है।
3. डीग में जल विकास की सुचार व्यवस्था नहीं है।
4. वर्तमान में आने वाले पर्यटक के ठहरने के लिए सुविधाओं का पूर्णतः अभाव है।

प्रासंगिकता

डीग में पर्यटक के विकास की विपुल सम्भावनाएँ है। डीग के आर्कषक जलमहल अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध है, जिनका उचित रूप से संरक्षण किया जाना नितान्त आवश्यक हे। वर्तमान में कई राजकीय कार्यालय पुराने महल में विद्यमान है, जिन्हें अलवर सड़क पर राजकीय हेतु प्रस्तावित स्थल पर स्थानान्तरित किया जाना प्रस्तावित है। शहर में पर्यटन सुविधाओं के विकास हेतु कृषि उपज मण्डी योजना क्षेत्रक में 4.0 एकड भूमि प्रस्तावित की गई है।

डीग के मेला मैदान पर प्रतिवर्ष जवाहर पशु मेला एवं प्रदर्शनी का आयोजन किया जाता है।

साथ ही यहाँ पर पर्यटक स्थल को बढ़ावा देने के लिए हो रहे अतिक्रमण को कम करने के प्रयास किया जा रहा है।

पुरातत्व विभाग द्वारा जलमहल परिक्षेत्र के उचित रखरखव व संरक्षण हेतु योजना बनाई जानी चाहिये ताकि शहर में पर्यटक गतिविधियों को बढ़ावा मिल सके। शहर में पर्यटकों को बढ़ाने के लिए धार्मिक एवं ऐतिहासिक महत्व के स्थलों जैसे लक्ष्मण मंदिर, राम भवन आदि का भी उचित रखरखाव व संरक्षण किया जाना प्रस्तावित है।

निष्कर्ष

सारांशतः शोधकर्ता ने सम्पूर्ण भरतपुर के पर्यटक स्थलों के सतत् विकास को ध्यान में रखते हुए यहाँ के आर्थिक विकास मको प्रस्तावित किया है। यदि यहाँ हो रही अव्यवस्थाओं को स्थानीय जनता के सहयोग से व सम्पूर्ण सरकार की नीतियों से क्रियान्वित किया जाये तो पर्यटन उद्योग द्वारा न मात्र क्षेत्रीय बेरोजगारी को कम किया जा सकता है। वरन् डीग महलों को विश्व स्तरीय महलों की सूची में लाया जा सकता है। प्रस्तुत उक्त संदर्भ डीग के पर्यटक स्थल के सतत् विकास के मार्ग पर अग्रसर करेगा वही यहाँ के पर्यटन उद्योग को उठाने में सहायक होगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *न्यू ट्रेड पॉलिसी 2008 से 2012 भारत सरकार।*
2. *प्रगति प्रतिवेदन पत्रिकाएं राज दी हैरिटेज वेल्थ ऑफ राजस्थान, राजस्थान ट्यूरिज्म, आरटीडीसी, जयपुर, 2012*
3. *आहिर्नी, एम.जे., (2000) ''द सोशियल इफैक्ट ऑफ ट्यूरिज्म, न्यूयार्क।*
4. *पर्यटन नीति, पर्यटन कला, संस्कृति विभाग, जयपुर, 2012–2013, 2014–15*
5. *राजस्थान पर्यटन ''उपलब्धियों के वर्ष ''पर्यटन विभाग, जयपुर 2012*
6. *दी हैरिटेज वेल्थ ऑफ राजस्थान, राजस्थान ट्यूरिज्म आरटीडीसी, जयपुर 2011–2014*
7. *सुजस, सूचना व जनसंचार मंत्रालय द्वारा, जयपुर 2010*
8. *पर्यटन विभाग द्वारा प्रकाशित ब्रोसर्स 2011–12, 2012–13, 2014–15*
9. *फरर्यूसन, जेम्स, हिस्ट्री ऑफ इण्डियन एण्ड ईर्स्टन आर्किटेक्चर।*
10. *पिलानिया, डॉ. ज्ञान प्रकाश, हेरिटेज ऑफ सवाई जनसिंह, पृ. 2*
11. *डे. नटवर सिंह : महाराजा सूरजमहल, पृ. 42*
12. *भरतपुर पर्यटक विभाग, सूचना विभाग, भरतपुर।*
13. *नगर नियोजन विभाग, भरतपुर।*
14. *सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग "सुजरा वार्णिकांक", राजस्थान सरकार, 2010, पृ. 282*